भाकृअनुप– कृषि विज्ञान केन्द्र, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली द्वारा नाबार्ड प्रायोजित दो दिवसीय वेबिनार का आयोजन

भाकृअनुप- कृषि विज्ञान केन्द्र, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, इज्जतनगर बरेली एवं नाबार्ड के सहयोग से आज दिनांक 19 फरवरी, 2021 को "सेन्सेटाईजिंग एक्सटेंशन प्रोफेशनल्स फॉर सक्सेसफुल लाइवस्टॉक फार्मिंग मॉडल्स टु डेव्लप आत्मनिर्भर किसान" ("Sensitizing Extension Professionals for Successful Livestock Farming Models to develop Aatmanirbhar Kisan") विषय पर दो दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ ए.के.सिंह, उप-महानिदेशक, कृषि प्रसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने सुझाव दिया कि 10-20 जिलो के लिए विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र मिलकर अपने संबन्धित जिलो के कृषि व पशुपालन से संबन्धित समस्याओं का समाधान करने हेतु परियोजना बनायें, उन्होंने विभिन्न

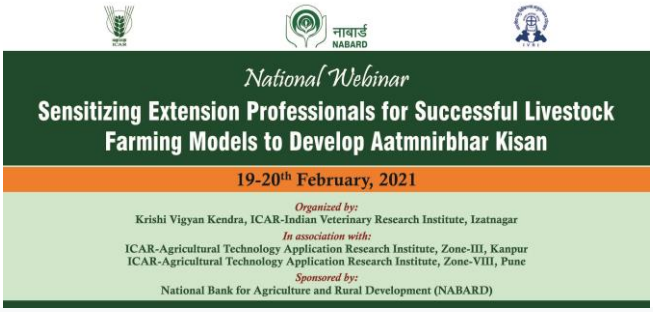

प्रबन्धन कार्यों को ट्रायल के रूप में करने जैसे गृह प्रबन्धन, चारा प्रबन्धन, पानी प्रबन्धन, गोबर का प्रबन्धन, चारा, साइलेज आदि के प्रबंधन व गुणवत्ता बढ़ाने के मॉडल बनाए जाने पर विशेष ज़ोर दिया जिससे पशुपालन से मीथेन गैस का उत्पादन कम किया जा सके। एकीकृत पशुपालन माडल, कोआपरेटिव सोसाइटी जैसी प्रणाली पर कार्य करने की बात की। विशिष्ट अतिथि डॉ. डी.एस. चौहान सीजीएम, नाबार्ड, लखनऊ ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि मूल्य संवर्धन, एसीएबीसी द्वारा कृषि विद्यार्थियों का प्रशिक्षण, जिलो के लिए प्रशिक्षण माडल निर्माण पर भाकृअनुप से जुड़ कर कार्य करने की योजना पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि नाबार्ड वैसे तो नव-उद्यमियों को उद्यम की स्थापना के लिए

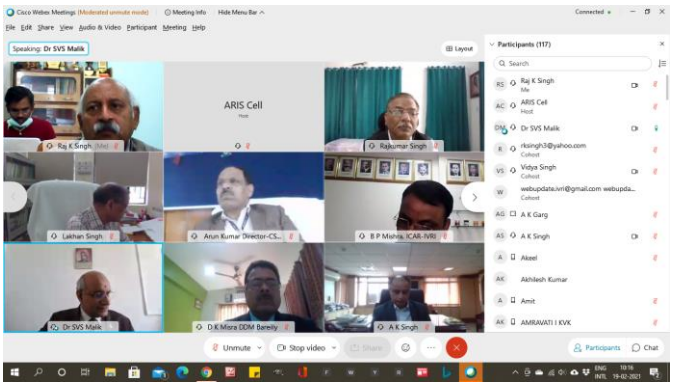

विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक सहयोग कर ही रही है परन्तु आर्थिक सहयोग से अधिक जरूरी है कार्य का ज्ञान होना तथा उस ज्ञान का सही ढंग से क्रियान्वयन करना। इससे पूर्व अपने स्वागत सम्बोधन में डॉ. बी पी मिश्रा, निदेशक भाकृअनुप- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, ने सभी अतिथियों के स्वागत करते हुये संस्थान की उपलब्धियों की चर्चा

करते हुये बताया कि कृषि क्षेत्र अब सामान्य कृषि से कृषि उद्यमिता की ओर अग्रसर है इसमें भी डेयरी पशुपालन और कुक्कुट पालन में अपार संभावनायें हैं जिनका दोहन किया जाना चाहिये। डॉ. अतर सिंह, निदेशक अटारी, जोन - 3, कानपुर ने कृषि विज्ञान केंद्र – आई वी आर आई को सफलतापूर्वक इस वेबिनार के आयोजन पर बधाई देते हुए वेबिनार के विषय की महत्ता पर ज़ोर दिया और प्रदेश में पशुपालन के विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। डॉ. लाखन सिंह, निदेशक अटारी-8, पुणे ने अपने ज़ोन के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रो के शयोग से सफलता पूर्वक कृषि कार्य या पशुपालन करने वाले कृषको के बारे में अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. एस.वी.एस मलिक, प्रधान वैज्ञानिक, पशुचिकित्सा जन स्वास्थ द्वारा किया गया । वेबिनार में देश के विभिन्न राज्यों से 550 प्रतिभागियाओं ने पंजीकरण किया और उपस्थित रहे ।

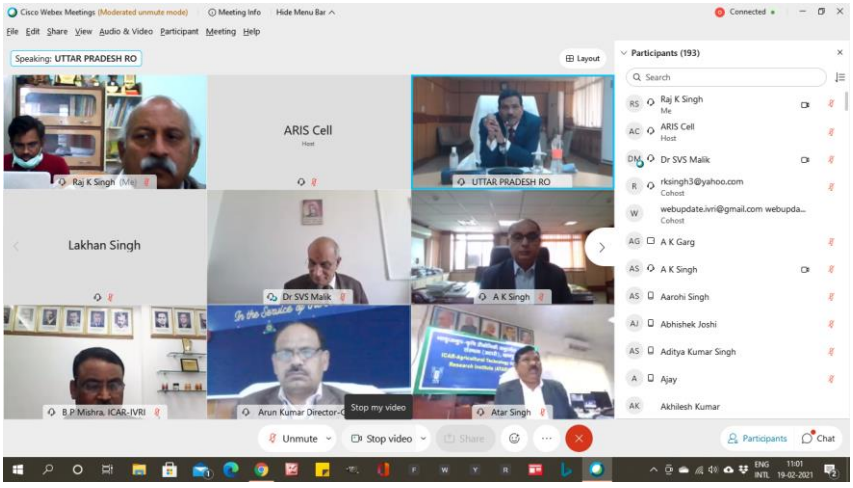

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ॰ जी॰के॰ गौड़, विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, डॉ॰ ए॰के॰ मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, एन॰डी॰ आर॰आई॰ करनाल तथा डॉ॰ इ॰बी॰ चाकुरकर, निदेशक, सी॰सी॰ए॰आर॰आई॰, गोवा ने प्रस्तुतीकरण किया। इस सत्र में 8 पोस्टरों का प्रस्तुतीकरण भी किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ॰ राज कुमार सिंह, पूर्व निदेशक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, सह-अध्यक्षता डॉ॰ गीता चौहान, प्रधान वैज्ञानिक, पशुधन उत्पाद तकनीकी विभाग तथा संचालन डॉ॰ अमित कुमार, पशु आनुवंशिकी विभाग ने की। द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ॰ ए॰के॰ तोमर, निदेशक, सी॰एस॰डब्लू॰आर॰आई॰, अविकानगर, डॉ॰ भूकिया प्रकाश, प्रधान वैज्ञानिक, कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद, डॉ॰ ए॰के॰ दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, सी॰ आई॰आर॰जी॰, मखदूम, मथुरा, डॉ॰ सांतनु बानिक, प्रधान वैज्ञानिक, एन॰आर॰सी॰ ऑन पिग, गुवाहाटी ने प्रस्तुतीकरण दिये। सत्र की अध्यक्षता डॉ॰ ए॰के॰गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, सह-अध्यक्षता डॉ॰ ए॰ के॰ बिस्वास, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, तथा संचालन डॉ॰ जयदीप,वैज्ञानिक, केन्द्रीय कुक्कुट अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर ने की। सत्र के अन्त में डॉ राज करन सिंह ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया और सफलतापूर्वक आयोजन के लिए सभी का आभार प्रकट किया।